बालकों में अभिवृत्तियों और पूर्वाग्रहों का विकास मुख्यतया परिवार और समुदाय में ही होता है। अतः उनमें परिवर्तन का सफल तरीका भी परिवार और समुदाय के माध्यम से ही हो सकता है परन्तु यह सदैव सम्भव नहीं होता क्योंकि वयस्कों के सामाजिक मूल्य पर्याप्त स्थायी होते हैं एवं उनमें परिवर्तन सम्भव नहीं होता।

अनेकों मनोवैज्ञानिकों ने जातीय एवं धार्मिक पूर्वाग्रहों को दूर करने के लिए बालकों के ग्रीष्म कैम्प लगाने का सुझाव दिया है, जिससे विभिन्न जाति एवं धार्मिक समुदाय के बालक उपस्थित हों और वे निकट से एक दूसरे को समझ सकें परन्तु कभी-कभी पूर्वाग्रह दूर करने एवं सामाजिक अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाने की इस विधि के विरोधी परिणाम भी प्रदर्शित होते हैं। उसके पूर्वाग्रह दूर होने की अपेक्षा और अधिक स्थायी हो जाते हैं।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(Factors Influencing Social Development)

बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले जितने भी तत्व हैं उनमें से परिवार सर्वप्रथम एवं सबसे लम्बे समय तक बालक के विकास को प्रभावित करता रहता है। परिवार के महत्वपूर्ण योगदान को सभी विद्वानों ने एकमत से स्वीकार किया है। परिवार अपने विभिन्न पहलुओं में बाल विकास को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता रहता है। परिवार बालक को शारीरिक एवं सामाजिक कुल परम्परायें प्रदान करता है। अपने माता-पिता के द्वारा बालक जैविकीय गुणसूत्र प्राप्त करता है जिससे उसकी क्षमताओं की सीमा निर्धारित हो जाती है। इन क्षमताओं को प्राप्त करने के अवसर परिवार एवं वातावरण के अन्य तत्वों द्वारा प्रदान किये जाते हैं। सामाजिक कुल परम्परायें परिवार की विभिन्न पिछली पीढ़ियों के अनुभव और अभिवृत्तियों के फलस्वरूप माता-पिता के जीवन का अंग बन जाती हैं। ये ही सामाजिक कुल परम्परायें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में बालकों को प्रदान की जाती है, जो उसके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंग बन जाती हैं। प्रत्येक परिवार अपने बालकों के लिए एक अद्वितीय वातावरण प्रदान करता है।

परिवार में बालक सम्पूर्ण विश्व के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। परिवार वह स्थान है, जहाँ बालक विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है जो आगे चलकर उसमें सहयोग, सहकारिता, निर्णय लेने की क्षमता, स्वयं को एवं दूसरों को एवं नियन्त्रित करने की क्षमता प्रदान करता है।

परिवार में ही बालक को चेतन अथवा अचेतन रूप से शाला जाने के लिए भी तैयार किया जाता है। परिवार के इस परिचित एवं स्नेहपूर्ण वातावरण से जहाँ बालक ही सबसे महत्वपूर्ण है, शाला का वातावरण पूर्णतया भिन्न होता है जहाँ वह अनेक बालकों में से एक होता हैं। इस परिवर्तन को माता-पिता सुनियोजित योजना के द्वारा सरल एवं सुगम बना देते हैं। उसके दोपहर की नींद, मलमूत्र त्याग की आदतें, भोजन का समय एवं आदतें इस प्रकार

Scanned with CamScanner

...ित की जाती है ताकि वह शाला के कार्यक्रम के अनुरूप हो सके और उसे अपने जीवन में पहुँ...
...क परिवर्तन की आवश्यकता न पड़े।

इस प्रकार परिवार के विभिन्न पहलू बालक के विकास को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते रहते हैं। इनमें से विभिन्न बालक के व्यक्तित्व विकास के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं--

(A) **अभिभावकों की अभिवृत्तियाँ** (Parental Attitudes)

अभिभावक बालकों के साथ जिस प्रकार का व्यवहार करते है उसी प्रकार से उनकी अभिवृत्तियों का बालकों के विकास पर तो प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही साथ बालकों का अभिभावकों के प्रति प्रत्यय का निर्माण भी होता है। इन्हीं प्रत्ययों के आधार पर अपने आस-पास के वातावरण में रहने वाले सब वयस्कों एवं संरक्षकों के प्रति अभिवृत्तियों का विकास करता है। इन्हीं अभिवृत्तियों के आधार पर उसके व्यवहार के नमूने भी निर्धारित होते हैं।

माता-पिता बालक के जन्म के पहले ही बालक के प्रति अभिवृत्तियों का विकास कर लेते हैं। बालक के प्रति माता-पिता की अभिवृत्तियाँ अंशत: उनके सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर, अंशत: उनके स्वयं के व्यक्तित्व के आधार पर और अंशत: माता-पिता की भूमिका के सम्बन्ध में अपनी धारणाओं के आधार पर बनती हैं।

अनेक परिवारों में माता-पिता अपने बालकों के पालन-पोषण के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की अभिवृत्तियाँ अपनाते हैं। **एम० ई० आयर** तथा **आर०जी०बर्नराइटर** ने अपने एक अध्ययन में पाया कि माता-पिता बालक के अनुशासन में जिस प्रकार की अभिवृत्तियों को अपनाते हैं उनका बालक के व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अभिभावकों द्वारा अपनाई जाने वाली अभिवृत्तियाँ (Parental Attitudes) विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं--

(1) अति संरक्षण (Over Protection)-अभिभावकों में बालकों के प्रति अभिवृत्तियों का निर्माण कई बार बालकों के जन्म के पहले ही हो जाता है। अभिभावकों की बालकों के प्रति अभिवृत्तियाँ उनके स्वयं के अनुभव, परम्पराओं और उनके अपने अभिभावकों के शिक्षण के परिणामस्वरूप विकसित होती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में पाया है कि अधिक आयु वाले अभिभावकों की अपेक्षा कम आयु वाले अभिभावक बालक के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ठीक प्रकार से नहीं करते हैं। इसका मुख्य कारण यह माना गया है कि वे अपने नये उत्तरदायित्वों के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं। कुछ अभिभावक बालकों के प्रति अति संरक्षण की अभिवृत्ति अपनाते हैं, फलस्वरूप बालकों में अति आश्रितता के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। अति संरक्षण के कारण बालक नई परिस्थितियों के प्रति उचित समायोजन नहीं कर पाते हैं। उनमें बेचैनी, उत्तेजना, शीघ्र परेशान होने, ध्यान एकाग्रता की कमी आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य लक्षण भी उत्पन्न हो सकते हैं; जैसे-अपनी योग्यताओं में विश्वास न होना, दूसरों से शीघ्र प्रभावित होना, दूसरों पर अधिक आश्रित होना तथा अपनी आलोचना के प्रति अति संवेदनशील होना आदि।

(2) अत्यधिक छूट होना (Permissiveness)-अति संरक्षण के विपरीत कुछ अभिभावक अपने बालकों को हर बात की अनुमति या अधिक छूट (Permissiveness) देते हैं। वे बच्चों के प्रति अधिक सहनशील होते हैं। वे बालकों के प्रारम्भिक अपरिपक्व विचारों और महत्वाकांक्षाओं को स्वीकार कर लेते हैं। वे बालकों को दूसरे बालकों के साथ खेलने के लिये उत्साहित करते हैं।

(3) तिरस्कार (Rejection)-कुछ अभिभावक अपने बच्चों का तिरस्कार (Rejection) करते हैं। तिरस्कार की अभिवृत्ति केवल बाह्य तिरस्कार के ही रूप में नहीं दिखाई देती, वरन् ऐसे अभिभावक बालकों के प्रति उदासीन रहते हैं, उनके किसी कार्य में रूचि न लेना आदि व्यवहार भी प्रदर्शित कर सकते हैं, तिरस्कार को छिपाने के लिये अभिभावक कभी-कभी ऐसे व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं कि वह अति संरक्षण प्रदर्शित होता है।

(4) अति प्रभुत्वशाली अभिवृत्ति (Domination)-कुछ अभिभावक अपने बच्चों के प्रति अति प्रभुत्वशाली अभिवृत्ति (Domination) अपनाते हैं। प्रत्येक परिवार में अभिभावकों में से एक न एक अधिक प्रभुत्वशाली होता है। ऐसे बालक उत्तम सामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। वे ईमानदार, विनम्र और सतर्क होते हैं परन्तु दूसरी ओर उनके शर्मीले, दब्बू और अति संवेदनशील होने की सम्भावना भी होती है। उनमें अपर्याप्तता और हीनता की भावना विकसित हो जाती है। बड़े होने पर वे यह अनुभव करते हैं कि उनके साथ अन्याय किया गया है। उन्हें भय रहता है कि उन्हें धोखा दिया जा रहा है।

Scanned with CamScanner

(5) दब्बूपन (Submissiveness)–कुछ अभिभावक बालकों को इतनी अधिक छूट दे देते हैं कि वे उन्हें नियन्त्रण या प्रभाव में रखते हैं। जो माता-पिता की अभिवृत्ति रखते हैं उनका स्वयं का व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है। वे स्वयं उत्तरदायित्व स्वीकार करने के योग्य नहीं होते हैं।

(6) पक्षपातपूर्ण अभिवृत्ति (Favouritism)–कुछ अभिभावक अपने बालकों के साथ पक्षपात (Favouritism) पूर्ण अभिवृत्ति अपनाते हैं। सामान्यतया यह देखा गया है कि माँ अपने बेटे का और पिता अपनी बेटी का अधिक पक्ष लेते हैं। कुछ परिवारों में लड़कों का अधिक पक्ष लिया जाता है। कुछ अभिभावक बड़े बालक और सबसे छोटे बालक के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं। परिवार के सदस्य उस बालक का अधिक पक्ष लेते हैं जो नियमित रूप से स्कूल जाता है, अच्छी आदतों वाला होता है अथवा परिवार में लोकप्रिय होता है। शारीरिक दोषयुक्त एवं मानसिक दुर्बल बालकों का भी अधिक पक्ष लिया जाता है। इस अभिवृत्ति का भी बालक के व्यक्तित्व विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(B) बाल पोषण की विधियाँ (Child Training Methods)

अभिभावकों द्वारा अपनाई जाने वाली बाल-पोषण की विधियाँ बालक के विकास को प्रभावित करती हैं। अभिभावकों की बाल-पोषण की विधियाँ उनके स्वयं के पोषण में उनके अभिभावकों द्वारा अपनाई गई विधियों के आधार पर निर्धारित होती हैं। यदि बालक का पोषण अधिक प्रभुत्वशाली वातावरण (Authoritation) में किया जा रहा है तो बालक में अनाज्ञाकारिता की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है। माता-पिता जितने अधिक रूढ़िवादी होते हैं, बाल-पोषण में उनके उतना अधिक प्रभुत्वशाली होने की सम्भावना होती है। यदि पोषण विधि अधिक प्रजातान्त्रिक (Democratic) वातावरण से सम्बन्धित है तो बालक में स्वतन्त्र चिन्तन, अधिक सृजनात्मकता व अधिक सहयोग जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। अभिभावक बालकों के पालन-पोषण में अधिक छूट वाली प्रवृत्ति अपना सकते हैं। इसके फलस्वरूप बालकों में अनुशासनप्रियता का विकास नहीं होता है। ऐसे परिवारों में पारिवारिक सम्बन्धों के बिगड़ने की सम्भावना अधिक रहती है।

(C) परिवार का आकार (Family Size)

परिवार के सदस्यों की संख्या, परिवार में होने वाले अंत: क्रियात्मक व्यवस्था को प्रभावित करती है। **बोसार्ड तथा बॉल** (Bossard & Boll, 1966) के अनुसार, परिवार में नये सदस्य के आगमन के साथ पारिवारिक अंत: क्रियात्मक व्यवस्था की संख्या तीन गुनी बढ़ जाती है, जैसे परिवार में जब तीन सदस्य होते हैं तो अंत: क्रियात्मक संख्या 5 होती है। एक नये बालक के जन्म के साथ अंत: क्रियात्मक संख्या 11 हो जायेगी। एक और नये सदस्य के आगमन के साथ अंत: क्रियात्मक संख्या 26 हो जायेगी।

इसके अतिरिक्त परिवार में विभिन्न आयु और लिंग के सदस्य होते हैं। हर सदस्य की अपनी रुचियाँ, आवश्यकतायें और आकांक्षायें होती हैं। इस प्रकार हर सदस्य परिवार के दूसरे सदस्यों से विभिन्न प्रकार की माँग करते हैं जिससे परिवार में अस्वस्थ सामाजिक वातावरण उत्पन्न होता है। जब माता और पिता बालक से विभिन्न प्रकार की माँगे करते हैं अथवा जब माता-पिता बालकों में अनुशासन लाने के लिये विरोधी प्रवृत्तियाँ अपनाते हैं तो इसके फलस्वरूप भी परिवार में संघर्ष और तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है।

छोटे परिवारों में, जहाँ माता-पिता के अतिरिक्त केवल एक या दो बालक होते हैं वहाँ निश्चित ही बालकों को अधिक आर्थिक और सामाजिक लाभ प्राप्त होते हैं। बड़े परिवारों में जहाँ माता-पिता के अतिरिक्त 6 या अधिक बालक होते हैं वहाँ पारिवारिक योजना में कठिनाई उत्पन होती है। उसे परिवारों में बालकों की ओर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना कठिन हो जाता है। इस कारण समूह और समूह के कल्याण को दृष्टि में रख कर कार्य किया जाता है। बड़े परिवारों में सुविधा की दृष्टि से हर बालक को जन्म के क्रम के अनुसार कोई न कोई भूमिका प्रदान कर दी जाती है और इस भूमिका को पूरा करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है। यदि बालक अपनी भूमिकाओं को पसंद करते हैं तो कोई परेशानी उत्पन्न नहीं होती, परन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो परिवार में तनाव उत्पन्न होता है तथा अभिभावक, बालक एवं भाई-बहनों के आपसी सम्बन्धों में गिरावट उन्पन्न हो जाती है।

दूसरी ओर इन बड़े परिवारों के बालक सहकारिता का भाव सीखते हैं। समय-समय पर अपनी भूमिकाओं के परिवर्तन की आदत उन्हें पड़ जाती है और समाज में समायोजन करने में उन्हें सरलता होती है। इन बालकों में संवेगात्मक विकास अपेक्षाकृत कम पाये जाते हैं।

वास्तव में अभियोजन की योग्यता मूलत: परिवार के आकार पर नहीं वरन् परिवार के प्रकार पर निर्भर करती है। इसमें आर्थिक पहलू एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

भाई बहिनों से सम्बन्ध (Sibling Relationships)

बालक अतिशीघ्र परिवार में अपने स्थान तथा अपनी भूमिका के प्रति सचेत हो जाता है। अधिकांश बालक परिवार में अपनी व अन्य भाई-बहनों की तुलना करते हैं और अपनी भूमिका को सदैव हीन एवं निकृष्ट मानते हैं।

एडलर ने अनेकों वर्षो पूर्व यह बताया कि जन्म का क्रम बालक के व्यक्तित्व को बहुत अधिक प्रभावित करता है।

सबसे बड़ा बालक अक्सर स्वार्थी और बिगड़ा हुआ बन जाता है। **स्ट्रॉस** (Strauss) के अनुसार, बड़े बालक सदैव स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण समझते हैं, ऐसा करना उनके लिए अत्यन्त आवश्यक भी होता है क्योंकि उन्होंने अपने कटु अनुभवों से यह सीखा है कि उसें उसके स्थान से विस्थापित भी किया जा सकता है, जैसा कि दूसरे बालक के जन्म के समय हुआ था। इनमें अक्सर निराशावादी अभिवृत्तियाँ विकसित हो जाती हैं। दूसरे बालकों को माता-पिता के संवेगात्मक तनाव, अति संरक्षण तथा चिन्ता का अनुभव नहीं होता है, फलस्वरूप दूसरे बालक पहले की अपेक्षा आत्म-निर्भर होते हैं। दूसरे बालकों में स्नायुविक रोगों का विकास कम होता है। वे बहिमुर्खी और सुखमिजाज होते हैं।

तीन -चार बालकों के परिवार में मध्य का बालक लगभग तिरस्कृत रहता है। उसमें आक्रामकता का अभाव रहता है, सुझाव- ग्राहिता अधिक पाई जाती है, ध्यान की एकाग्रता कम पाई जाती है तथा सामाजिक अभिवृतियों में सामाजिक दृष्टि से वह समूह में रहना अधिक पसन्द करता है।

परिवार का सबसे छोटा बालक अति संरक्षण या लाड़-प्यार के कारण बिगड़ा हुआ बालक होता है। इनमें सामाजिक परिपक्वता विकसित नहीं हो पाती। आत्म-निर्भरता का विकास नहीं हो पाता तथा वे जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं।

(E) परिवार की स्थापना (Home Setting)

बालकों के व्यक्तित्व के विकास तथा परिवार की व्यवस्था से सम्बन्धित कुछ मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं-

(I) **परिवार का सामाजिक स्तर** (Social Status of Family)--पारिवारिक सम्बन्धों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है, विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों में पारिवारिक जीवन का नमूना भिन्न होता है। उनमें गृह-व्यवस्था, पति-पत्नी के आपसी सम्बन्ध, अभिभावकों की भूमिकाओं आदि अनेक पहलुओं में विभिन्नतायें पाई जाती हैं। मध्यम श्रेणी के बच्चों पर सामाजिक अनुरूपता (Social Conformity) स्थापित करने पर बल दिया जाता है। ऐसे परिवार समाज की आलोचनाओं से डरते है। इन परिवारों में बालक परिवार का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है, उससे अनेकों अपेक्षायें रहती है। इस कारण उसके साथ विनम्र व्यवहार रखा जाता है एवं पालन- पोषण में प्रजातांत्रिक विधि अपनाई जाती है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर के अनुसार घर का प्रकार एवं समुदाय में घर की स्थिति प्रभावित होती है। फलस्वरूप यह स्वाभाविकतया निर्धारित हो जाता है कि बालक किस प्रकार के व्यक्तियों से कितनी मात्रा में सम्बन्धित रहेगा। इन सम्बन्धों का भी प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है।

अभिभावक का व्यवसाय (Parental Occupation)–बालक के पारिवारिक सम्बन्धों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। पिता के व्यवसाय का परिवार के बच्चों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। बड़े बच्चों की सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत कुछ पिता के व्यवसाय से ही निर्धारित होती है। कुछ अध्ययनों में (H. Rodman,et. al, 1969, J. H. S. Bossard & E. S. Boll 1966) यह देखा गया है कि जो बच्चे अपने पिता के व्यवसाय को बताने में शर्म का अनुभव करते है, उन बच्चों की उनके पिता, घर और स्वयं के प्रति विपरीत अभिवृत्तियाँ निर्मित होती है। माँ का व्यवसाय भी बालकों के व्यवहार को प्रभावित करता है। माँ यदि किसी व्यवसाय में है तो छोटे बालकों को अकेले रहना पड़ता है जिससे उनमें अप्रसन्नता और अकेलेपन की भावनायें उत्पन्न होती हैं। यह भावनाएँ उस समय और भी तीव्र हो जाती हैं, जब बालक के दूसरे साथियों की माँ घर में रहकर उनका पालन-पोषण करती हैं।

(ii) टूटे परिवार (Broken Homes)–परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु या तलाक की अवस्था में परिवार का ढाँचा परिवर्तित हो जाता है, उस स्थिति में वह टूटा परिवार कहलाता है। इसके फलस्वरूप पारिवारिक जीवन में परिर्वतन आ जाता है और अनेकों समस्यायें उत्पन्न हो सकती हैं। कभी-कभी परिवार में मृत्यु के कारण बालकों को दादा- दादी अथवा अन्य रिश्तेदारों के साथ रहना पड़ता है। यदि परिवार के कमाने वाले सदस्य की मृत्यु हो जाती है तो आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। यदि परिवार का बिखराव, तलाक या माता-पिता में किसी के घर छोड़कर चले जाने पर उत्पन्न होता है तो समस्याओं और जटिल हो जाती हैं। अतः परिवार के बिखराव का प्रकार निर्धारित करता है।

Scanned with CamScanner

(iii) रिश्तेदार (Relatives) भी परिवार का एक अंग बन जाते हैं और पारिवारिक सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं। रिश्तेदारों के आने पर पारिवारिक व्यवस्था में परिवर्तन हो जाता है, इन अस्थायी परिवर्तनों का बालक के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

(iv) दोषपूर्ण बच्चे (Defective Children) भी पारिवारिक सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं। परिवार में जब कोई बालक शारीरिक या मानसिक दोषयुक्त होता है तो ऐसे बच्चों की देखभाल में माता-पिता को अपेक्षाकृत अधिक समय एवं शक्ति लगानी पड़ती है। परिणामस्वरूप अन्य सामान्य बालकों की ओर कम ध्यान दिया जाता है। इसका भी पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ता है।

(F) पारिवारिक भूमिकाओं के प्रत्यय (Concepts of Family Roles)

पारिवारिक और सामाजिक नियमों, मूल्यों एवं प्रथाओं के कारण परिवार के प्रत्येक सदस्य की भूमिकायें पूर्व निर्धारित होती हैं। जब परिवार के सदस्य अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करते हैं तो परिवार में समायोजन की स्थिति उत्पन होती है। इसके विपरीत यदि सदस्य भूमिकाओं का निर्वाह नहीं करते अथवा दोषपूर्ण ढंग से करते हैं तो परिवार में कुसमायोजन उत्पन्न होते हैं। परिवार के कार्यों के कुछ प्रमुख प्रत्यय निम्नलिखित हैं-

अभिभावक का प्रत्यय (Concept of Parents)—एक वयस्क की दृष्टि में अभिभावक केवल वह व्यक्ति नहीं है जो कि बालक को जन्म देता है एवं उसकी देखभाल उस समय तक करता है जबकि वह असहाय स्थिति में रहता है। वयस्कों की दृष्टि में अच्छे अभिभावक वे हैं जो सुखमय एवं उपयोगी जीवन निर्वाह के लिये बालकों को तैयार करते हैं। सभी अभिभावक अच्छे अभिभावक बनना चाहते हैं परन्तु इन लक्ष्य की पूर्ति के उनके मार्ग भिन्न-भिन्न होते हैं। सामान्यतया अभिभावकों के कार्य की दृष्टि से दो प्रकार के प्रत्यय हैं-

(i) परम्परागत प्रत्यय (Traditional Concepts)—इस प्रकार के प्रत्यय वाले अभिभावक प्रभुत्वशाली भूमिकायें अपनाते हैं। अपनी प्रभुत्वशाली भूमिकाओं के आधार पर वह बालकों को सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पारिवारिक मूल्य सीखने के लिए बाध्य करते हैं।

(ii) विकासात्मक प्रत्यय (Developmental Concepts)—इस प्रकार के प्रत्यय वाले अभिभावक अनुमतियुक्त भूमिकायें अपनाते हैं। बालक उन अभिभावकों को अच्छा समझते हैं जो उनकी सहायता करते हैं या उन्हें सुविधायें देते हैं तथा जो सहायता नहीं देते अथवा उन्हें निराश करते हैं उनको बुरा समझा जाता है। अच्छे अभिभावकों की निम्न विशेषतायें होती हैं-सहायक, अनुमतियुक्त, अच्छा अनुशासन, प्यार करने वाले, आदर्श,अच्छी प्रकृति वाले, स्नेहपूर्ण बातचीत करने वाले, सहानुभूतिपूर्ण, घर को खुशहाल बनाने वाले आदि।

बुरे संरक्षकों की निम्न विशेषतायें होती हैं—दण्ड देने वाले, घर में तनाव एवं अशान्ति उत्पन्न करने वाले, दोषारोपण करने वाले, बालक के खेलों में कम रुचि लेने वाले, दोस्तों के साथ खेलने और मिलने को मना करने वाले, बालक के खेलों में कम रुचि लेने वाले, कम स्नेह करने वाले, बालकों को दबाव में रखने वाले आदि।

माता और पिता का प्रत्यय (Concepts of Mother and Father)-एक मध्यम श्रेणी परिवार में , माँ वह स्त्री है जिसका विकासात्मक कार्य होता है। जो अपने बच्चों की देखभाल पति की सहायता से करती है, जो बालकों को शिक्षा देती हैं, अनुशासन सिखाती है एवं उनकी देखभाल करती है। छोटे बालक के लिये माँ वह स्त्री है जो उसके समस्त कार्य करती है, समझदारी से उसकी शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करती है, बालक को प्यार करती है एवं कठिनाई पड़ने पर उसकी सहायता के लिये तत्पर रहती है। जैसे-जैसे बालकों का विकास होता जाता है उनका माँ सम्बन्धी प्रत्यय ही कुछ अंशों में परिवर्तित हो जाता है। वे माता और पिता की तुलनात्मक भूमिका का अवलोकन करते हैं जिनमें उन्हें पिता की तुलना में माँ की भूमिका कम महत्वपूर्ण दिखायी देती है।

परम्परागत रूप से पिता परिवार का मुखिया तथा कमाने वाला सदस्य होता है। मध्यम श्रेणी के परिवारों में पिता का प्रत्यय विकासात्मक होता है जो बच्चों को शीघ्र समझ लेता है, बच्चों का साथी होता है, उनके विकास के लिये समय-समय पर निर्देश देता है एवं बच्चों के लिये तथा बच्चों के साथ अनेक कार्य करता है। ऐसे पिता परिवार में प्रजातांत्रिक नियन्त्रण का उपयोग करते हैं।

कुछ बालकों में माता-पिता के ये प्रत्यय स्पष्ट होते हैं तथा कुछ में अस्पष्ट होते हैं। जब माता-पिता निर्मित प्रत्ययों के अनुसार व्यवहार नहीं करते तो पारिवारिक सम्बन्धों में मन मुटाव उत्पन्न होता है। इसका प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है।

बालक का प्रत्यय (Concept of Child)—यह एक परम्परागत विश्वास है कि अच्छा बालक वह है जो अपने माता-पिता का आदर करता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है, उन्हें प्रसन्न रखता है, उसके साथ सहयोग करता है, स्वस्थ है और सीखने का इच्छुक है। बालक अपनी-अपनी भूमिकाओं के सम्बन्ध में किस प्रकार के

Scanned with CamScanner